उपसंहार

उपसंहार

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। यह बात ठीक ही है क्योंकि साहित्यकार समाज में रहकर वर्तमान समाज में हो रही गतिविधियों को देखता है और उनमें से महत्वपूर्ण घटनाओं एवं प्रसंगों से प्रभावित होकर उन घटनाओं तथा प्रसंगों को अपने साहित्य में चित्रित करता है। साहित्यकार इन सामाजिक प्रसंगों से प्रभावित होने पर जब गहराई में बैठकर अपने अनुभवों, लगन तथा प्रामाणिकता से उनका सृजन करता है, तब वह एक सफल कृति बन जाती है। किसी भी युग की समकालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के बारे में हमें जानकारी उपलब्ध करनी हो तो उस युग का समकालीन साहित्य हमें उपयोगी सिद्ध होता है।

किसी भी रचनाकार एवं कवि के काव्य को आत्मसात करना हो तो पहले कवि के जीवन और व्यक्तित्व से रूबरू होना अत्यावश्यक है। रचनाकार किस माहौल में पला, बड़ा हुआ, उसकी पारिवारिक स्थिति एवं संस्कार कैसे रहे, उस वक्त की सामाजिक स्थिति आदि बातों को समझे बिना हम उस रचनाकार के साहित्य को पूर्णतः नहीं समझ सकते हैं तथा उसके साहित्य एवं काव्य से उचित बोध नहीं ग्रहण कर सकते।

आधुनिक हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार नागार्जुन को अपनी छोटी उम्र में ही मातृस्नेह से वंचित होना पड़ा था। पिता की लापरवाही, घुमक्कड़ी तथा दायित्वहीन व्यवहार के कारण बालक नागार्जुन को बचपन से ही माता-पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा था। परिणामस्वरूप विद्रोही प्रवृत्ति बचपन से ही उनमें पनपने लगी थी। इनका जन्म सनातनधर्मी, अशिक्षित, संस्कारहीन दरिद्र परिवार में होने के कारण जन्म से ही परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ा। कवि का जन्म देहात में, निम्नवित्तवर्ग में होने के कारण सामान्य जन के प्रति अत्यंत लगाव था। सर्वहारा वर्ग के दुःखों को, कठिनाइयों को उन्होंने देखा था, खुद अनुभव किया था। इसलिए तो उनका काव्य भोगा हुआ यथार्थ है। जनसाधारण के दुःखों ने ही उन्हें रचनाकार बनने की प्रेरणा दी।

नागार्जुन के काव्य में हमें सामाजिक यथार्थ देखने को मिलता है। उन्होंने अपने काव्यसाहित्य को मात्र मनोरंजन का साहित्य न बना कर उसे यथार्थपूर्ण विधा के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने काव्यों में व्यक्ति एवं समाज की विभिन्न समस्याओं का सफलता से चित्रण किया है। उनके काव्य के केंद्र में रहा है - सामान्य मनुष्य तथा उसका अभाव एवं शोषण से ग्रस्त जीवन और उनके व्यंग्य और घृणा का लक्ष्य रहे हैं - सर्वहारा वर्ग का शोषण करनेवाले सेठ, साहूकार, पूँजीपति, भ्रष्ट व्यवस्था, अवसरवादी नेता, तथा सब कुछ देखकर भी अनदेखा करनेवाले असंवेदनशील लोग। पीड़ा, उपेक्षा और घुटन से भरा जीवन जीनेवाली भारतीय स्त्री भी उनके काव्य का विषय रही है। क्योंकि सर्वहारा के समान नागार्जुन नारी को भी शोषित ही मानते थे। उनके काव्य का स्वर विद्रोही रहा है। आडंबर तथा झूठ से घृणा करनेवाले महान साहित्यकार नागार्जुन सम्मानों से सम्मानित हुए थे।

नागार्जुन ने पौराणिक कथा के माध्यम से 'भस्मांकुर' और 'भूमिजा' इन दो खंडकाव्यों का निर्माण किया। इन खंडकाव्यों की कथावस्तु पौराणिक होते हुए भी समस्याएँ आधुनिक युगीन हैं। आधुनिक

काल के अनुरूप पौराणिक कथा-पात्रों को ढालने के हेतु कवि ने उनके अलौकिक तत्वों को दूर करके वास्तविक मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया है। लोकहित की प्रेरणा से प्रभावित होकर उन्होंने अपने खंडकाव्यों की निर्मिति की जिसमें वर्तमान नारी जीवन को काफी हद तक अभिव्यक्ति मिली है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी के प्रति देखने के परंपरागत भारतीय दृष्टिकोण में परिवर्तन जरूर हुआ है। नागार्जुन ने इस युगीन सत्य को वाणी दी है कि नारी का दैहिक और मानसिक शोषण भारतीय समाज में आज भी जारी है। अन्याय एवं अत्याचार का शिकार भारतीय नारी जीवन के प्रति समर्पित है। उसमें सहनशीलता, दया, क्षमा, त्याग, करुणा का शुद्ध सात्विक रूप अब भी विद्यमान है किंतु हमारी पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्था के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

नागार्जुन का 'भस्मांकुर' खंडकाव्य 1971 में प्रकाशित हुआ है तथा 'भूमिजा' उसके बाद। कवि ने 'भस्मांकुर' की भूमिका में स्वयं कहा है कि 'भस्मांकुर' की काम-दहन वाली कथा-वस्तु पिछले सात-आठ वर्षों से उनके मन-मस्तिष्क में पकती-उबलती रही है। इसका मतलब 1963-64 के आसपास उनके मन में 'भस्मांकुर' की कल्पना उपजी होगी। उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि साठोत्तरी परिवेश का सजीव चित्रण उनकी आँखों के सामने था। इस आधुनिक युग में पति-पत्नी के बीच उत्पन्न तनावों के कारण पति-पत्नी संबंध विच्छेद, तलाक की समस्या, बलात्कार एवं कई कारणों से स्त्रियों की आत्महत्याएँ आदि नारी जीवन से संबंधित समस्याओं को उन्होंने देखा था, परखा था तथा अनुभव किया था।

आधुनिक युग में शिक्षा के कारण स्त्रियों में जागृति आई है। उसका स्वाभिमान जागृत हुआ है। परंतु इसके साथ ही पुरुषों की, पति की उसके प्रति देखने की अविश्वासपूर्ण दृष्टि पति-पत्नी के बीच दरारें उत्पन्न कर रही हैं। पति-पत्नी के बीच तनाव का अविश्वास ही प्रमुख कारण है, जिसकी परिणति तलाक में होती है।

कवि ने 'भस्मांकुर' के माध्यम से अनमेल विवाह समस्या पर करारा व्यंग्य किया है। व्यंग्य नागार्जुन के काव्य की प्रमुख विशेषता है। कवि ने वर्तमान समाज में गरीबी, दहेज न दे सकने के कारण आज भी लडकी के माता-पिता अपनी लडकी को अयोग्य वर के साथ ब्याह देते हैं। इस अनमेल विवाह समस्या पर दृष्टिपात किया है।

पतिद्वारा अपने चरित्र के ऊपर लांछन लगाने से, अविश्वास दिखाने से आज भी वर्तमान युग में कई विवाहिताएँ आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर देती है, इसी ओर संकेत किया है।

अंधविश्वास भारतीय समाज के विकास की सबसे बड़ी बाधा है। वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद भी समसामायिक युग में लोग अंधविश्वासों का शिकार होकर पाखंडी साधुओं से ठगे जा रहे हैं। पाखंडी साधु उसका सहारा लेकर स्त्रियों का शोषण कर रहे हैं तथा सामान्य जनता को आर्थिक स्तर पर लूट रहे हैं। नागार्जुन ने इस सामाजिक समस्या पर भी प्रकाश डाला है।

राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो नागार्जुन के खंडकाव्यों में स्वाधीन भारत में स्थित पूँजीवादी समस्या तथा पूँजीपतियों का प्रभुत्व देखा जा सकता है। स्वाधीनोत्तर भारत में शासकों का जनता

पर अत्याचार भ्रष्ट न्यायव्यवस्था तथा स्वार्थी और अवसरवादी सत्ताधारियों का निम्न समाज पर अधिपत्य नागार्जुन के काव्यों में देखा जा सकता है। सत्ताधारी अपने स्वार्थ के लिए नौकरदार वर्ग से जी तोड़ मेहनत करवाता है। धोखादायक कामों को करवा लेता है और अगर उसमें उसके जीवित को कुछ हुआ तो परिवार वालों को चुप कराया जाता है। सरकारी व्यवस्था भ्रष्टाचार एवं शोषण का पर्याय बन चुकी है। इस प्रकार की विषम स्थितियों का सामना करने के लिए नागार्जुन हर व्यक्ति को सजग और संघर्षशील बनाना चाहते हैं। राजनीतिक समस्याओं के साथ ही वैश्विक समस्याओं की ओर भी कवि ने संकेत किया है। दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर राष्ट्रों पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए विज्ञान का दुरुपयोग कर अणुबम जैसी घातक अस्त्रों का उपयोग कर रहे हैं। कवि ने सामाजिक ही नहीं वैश्विक संदर्भ दिया है।

कालक्रम की दृष्टि से देखा जाए तो नागार्जुन के खंडकाव्य साठोत्तर काव्य रहा है। साठोत्तर काव्य की शिल्प-चेतना आधुनिक बोध से अनुप्राणित रही है, जिसका प्रभाव नागार्जुन के काव्य पर देखा जा सकता है। नागार्जुन ने अपने काव्यों में जनसाधारण की, आम जनता की भाषा का प्रयोग किया है, हाँ कहीं पर संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का प्रयोग अवश्य हुआ है।

समकालीन समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रबल कथावस्तु की जरूरत होती है। यह प्रबलता पुरानी कथाओं में देखी जा सकती है, जो जन-मन से जुड़ी होती है। अतः नागार्जुन ने पौराणिक कथावस्तु को नया संदर्भ देकर समकालीन समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने खंडकाव्यों में किया है, जिसमें परंपरागत नारी की तरह नागार्जुन के नारी पात्र विवशतापूर्ण परिस्थिति में चुप न रहकर विद्रोह करते हैं। नारी का विद्रोह तथा अपने अस्तित्व के प्रति सजगता नागार्जुन के खंडकाव्यों में आधुनिक बोध कराते हैं।

नागार्जुन रचित खंडकाव्य मुख्यतः साठोत्तर कालीन है। अतः नारी समस्याएँ, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ उसी काल की हैं। परंतु इसका अर्थ यह नहीं की ये समस्याएँ आज नहीं हैं। रचनानिर्माण के पैंतीस साल बाद आज भी ये समस्याएँ थोड़े बहुत प्रमाण में देखी जाती हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है नागार्जुन रचित खंडकाव्यों में नारी आदर्श गुणों से संपन्न होकर समकालीन व्यवस्था के प्रति आक्रोश करती है, तथा विद्रोह करती है। नागार्जुन ने नारी-हृदय को जाना है और उन्हें जो अनुभूति हुई है, वह उन्होंने हमारे सामने नारी के विविध रूपों में अभिव्यक्त की है। साथ ही कवि ने समकालीन सामाजिक राजनीतिक तथा धार्मिक समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। कहना न होगा कि उनके काव्यनिर्माण के पीछे लोकहित की भावना रही है।

नागार्जुन के खंडकाव्यों के विवरण, विवेचन एवं विश्लेषण के उपरांत निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने काव्यों में युगीन परिवेश का यथार्थ अंकन किया है। साथ ही नारी जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं और समस्याओं को यथातथ्य चित्रित करने में एवं पौराणिक आख्यान को नया रूप देने में उन्होंने पूर्णतः सफलता पाई है।

उपलब्धियाँ

नागार्जुन के खंडकाव्यों में चित्रित नारी जीवन का अध्ययन करने पर जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई वे इस प्रकार हैं -

1. नागार्जुन का जन्म अभावग्रस्त निम्न वित्तपरिवार में, साधारण गाँव में होने के कारण उन्होंने खुद जो देखा, स्वयं अनुभव किया, कारण उनके काव्यों में वास्तविकता तथा यथार्थता देखने को मिलती है।
2. नागर्जुन को आम भारतीय समाज के प्रति गहरी आस्था थी, इसलिए उनका काव्य उपेक्षित एवं शोषित जनता के पक्ष में खड़ा नजर आता है।
3. नागार्जुन पर मार्क्सवाद का प्रभाव होने के कारण उनके काव्य में चित्रित नारी का स्वर विद्रोह से भरा हुआ है।
4. उन्होंने नारी के शोषण, अन्याय के विविध पहलुओं को उजागर कर नारी में होनेवाली सहनशीलता के गुण का परिचय दिया है।
5. नागार्जुन के काव्य में अन्याय करनेवाले शासकों, पूँजीपतियों के प्रभुत्व के खिलाफ घृणा एवं नफरत है।
6. नागार्जुन के काव्य की प्रमुख विशेषता व्यंग्य है। अतः उनके खंडकाव्यों में भी व्यंग्य को पैनी धार दिखाई देती है।
7. नागार्जुन के काव्य की नारी शोषक पुरुष जाति से नफरत करती हुई दिखाई देती है।
8. नागार्जुन ने अंधविश्वास, रूढ़ियों एवं स्वार्थी साधुओं का पर्याप्त चित्रण कर उसके खिलाफ लोगों को जागृत किया है।
9. नागार्जुन ने स्त्रियों की वर्तमान विडंबनापूर्ण स्थिति में परिवर्तन के लिए नारी-जागरण की आवश्यकता बताई है।
10. नागार्जुन ने निष्पक्ष न्यायव्यवस्था की आवश्यकता बताई है।
11. नागार्जुन ने अपने काव्य में समकालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के अध्ययन के उपरांत इस बात का पता चलता है कि नागार्जुन की कविताओं पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है।

1. नागार्जुन की कविताओं में चित्रित सामान्य जन
2. नागार्जुन की कविताओं में व्यंग्य
3. नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक चेतना
4. नागार्जुन की कविताओं में राजनीतिक चेतना

विषयगत मर्यादा के कारण मैंने इन विषयों का विवेचन नहीं किया। अतः भविष्य में इन विषयों पर अनुसंधान हो सकता है।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

मूल ग्रंथ सूची -

1. अब तो बंद करो देवि, यह चुनाव का प्रहसन-नागार्जुन
2. खिचड़ी विप्लव देखा हमने - नागार्जुन, संभावना प्रकाशन हापुड, प्र. स. 1980
3. तालाब की मछलियाँ - नागार्जुन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 1974
4. तुमने कहा था - नागार्जुन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 1980
5. प्यासी पथराई आँखें - नागार्जुन, अनामिका प्रकाशन, इलाहबाद, प्र. सं. 1982
6. भूमिजा - नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1981
7. भस्मांकुर - नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1971 छठी आवृत्ति 1977
8. युग धारा - नागार्जुन, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1953
9. रत्नगर्भ - नागार्जुन
10. सतरंगे पंखोंवाली - नागार्जुन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1959
11. हजार - हजार बाहोंवाली - नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1981

सहायक ग्रंथ सूची

1. अग्निपुराण
2. अध्यात्मरामायण - अनुवादक-मुनिलाल, प्रकाशक - घनश्यामदास जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. आदिकालीन हिंदी साहित्य - डॉ. शंभूनाथ पांडेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. आधुनिक हिंदी काव्य और संस्कृति - डॉ. भक्तराज शास्त्री, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1996
5. आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय - धनंजय वर्मा, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली।
6. आधुनिक खंडकाव्यों में युगचेतना - डॉ. एन. डी. पाटील, अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1994
7. आधुनिकता और समकालीन रचनासंदर्भ - डॉ. नरेंद्र मोहन, आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1973
8. आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण - रमेश कुंतल मेघ, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1969
9. आज का हिंदी साहित्य - रामदरश मिश्र, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1975
10. आधुनिकता और हिंदी साहित्य - डॉ. इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, प्र. सं. 1973 दिल्ली।
11. आधुनिक हिंदी काव्य में नारी भावना - डॉ. शैलकुमारी, हिंदुस्थान अकादमी, इलाहाबाद (उ.प्र.) प्र. सं. 1951

12. आधुनिक कवि - भाग 3 - डॉ. रामकुमार वर्मा, द्वितीय संस्करण, संवत 2003 वि.
13. आधुनिक हिंदी काव्य में रूपविधाएँ - निर्मला जैन, प्र. सं. 1963
14. आधुनिक हिंदी काव्य - डॉ. सादिक देसाई, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1999
15. आधुनिक हिंदी खंडकाव्य - डॉ. एस तंकमणि अम्मा, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली. प्र. सं. 1987 (कोचीन विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध)
16. उजली आग - रामधारी सिंह 'दिनकर' - प्र. सं. 1956
17. उपन्यासकार नागार्जुन - बाबूराम गुप्त, श्यामप्रकाशन, जयपुर।
18. ओ अहल्या - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1985
19. काव्य शास्त्र - डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वी. सं. 1963 तृतीय संस्करण 1966, पंचम संस्करण 1972
20. काव्यप्रकाश - आचार्य मम्मट
21. काव्य के रूप - गुलाबराय, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण 1954
22. काव्य और कला तथा अन्य निबंध - डॉ. जयशंकर प्रसाद, भारती भांडार, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण 2005 वि.
23. काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास - डॉ. शकुंतला दूबे, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, सं. मार्च 1964
24. काव्यादर्श - दंडी - व्याख्याकार - टी. रणवीर सिंह, हिंदी अनुसंधान परिषद, दिल्ली, प्र. सं. 1959
25. काव्यालंकार - रुद्रट- हिंदी अनुवाद, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, प्र. सं. 2023 वि.
26. काव्यशास्त्र : विविध आयाम - सं. मधु खराटे, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2000 वि.
27. ग्राम्या - सुमित्रानंदन पंत - भारती भांडार, इलाहाबाद, षष्ठम संस्करण, 2021 वि.
28. चक्रव्यूह - कुँवरनारायण - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1956. प्रथम राधाकृष्ण संस्करण 1995
29. चिदंबरा - सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण 1970
30. चुभते चौपदे - हरिऔध, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी, प्र. सं. 1924
31. चिंतामणि भाग I - आ. रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, सं. 1977
32. छठवाँ दशक - विजय देव नारायण साही, हिंदुस्थान अकादमी, इलाहाबाद।
33. जायसी ग्रंथावली - आ. रामचंद्र शुक्ल
34. तारसप्तक - संपादक - अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1943
35. दूसरा सप्तक - संपादक - अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1951
36. नव्य प्रबंध काव्यों में आधुनिक बोध - डॉ. उर्वशी शर्मा, बोहरा प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. 1997

37. नयी कविता - सीमाएँ और संभावनाएँ - डॉ. गिरिजाकुमार माथुर, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1966
38. नयी कविता के प्रबंध काव्य : शिल्प और जीवनदर्शन - डॉ. उमाकांत गुप्त, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1985
39. नयी कविता के प्रतिमान - लक्ष्मीकांत वर्मा, भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 1957
40. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट, सेवासदन प्रकाशन रामपुरा, जि. मंदसौर (मध्यप्रदेश) प्र. सं. 1974
41. नागार्जुन का काव्य - आलोचना - डॉ. चंद्रहास सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 1996
42. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, रचना प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. 1991
43. नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1990
44. नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - डॉ. संतोषकुमार तिवारी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्र. सं. 1980
45. नये कवि : एक अध्ययन - डॉ. संतोषकुमारी तिवारी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली सं. 1961
46. नये प्रतिनिधि कवि - हरिचरण शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं. 1979
47. नहुष - मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी), अठारहवाँ संस्करण 2030 वि.
48. पहाड पर लालटेन - मंगलेश डवराल, सं. 1975
49. पंद्रहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक हिंदी काव्यरूपों का अध्ययन (शोध प्रबंध) रामबाबू वर्मा।
50. पाषाणी - डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी,
51. पउमचरिऊ - स्वयंभू - संपादक संकटाप्रसाद उपाध्याय
52. बलचनमा - नागार्जुन, रामकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
53. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत - प्रो. देशराज भाटी, प्र. सं. 1962
54. मनुस्मृति - संपादक - पं. हरिगोविंद शास्त्री, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
55. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व और काव्य - डॉ. कमलाकांत पाठक, प्र. सं. जनवरी 1960
56. मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता - डॉ. उमाकांत, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, सं. 1964
57. रामचरितमानस - तुलसीदास - प्रकाशक - रामनारायण बाल, इलाहाबाद, 1948
58. रसज्ञ-रंजन-महावीरप्रसाद द्विवेदी, तृतीय संस्करण 1938
59. वाल्मीकि - रामायण - महर्षि वाल्मीकि - संपादक - श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारडी (सूरत), प्रथम बार मुद्रित 1958, संवत 2014

60. विनयपत्रिका - गोस्वामी तुलसीदास, साहित्य सेवासदन, बुलानाला, वाराणसी। संशोधित संस्करण 1969
61. वैदेही वनवास - हरिऔध, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी, पंचम संस्करण 2015 वि.
62. वाङ्मय विमर्श - आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पूर्णा प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं. 2014 वि.
63. संशय की एक रात - नरेश मेहता, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, गिरगाँव, बंबई, सं. 1962
64. साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना - डॉ. महावीर वत्स, संजय प्रकाशन, सोमबाजार, दिल्ली, सं. 1996
65. सिद्धसाहित्य - डॉ. धर्मवीर भारती, किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1955
66. साहित्य दर्पण - आ. विश्वनाथ, निर्णयसागर प्रेस, बंबई सं. 1922
67. साहित्यालोचन - डॉ. श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र. सं. 2008 वि.
68. संस्कृत आलोचन - द्वितीय खंड, बलदेव उपाध्याय, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, द्वि. खं. 1963
69. हिंदी में आधुनिकतावाद - दुर्गा प्रसाद गुप्ता, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1998
70. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण
71. हिंदी का प्रगतिवादी काव्य - उमेश मिश्र
72. हिंदी की मार्क्सवादी कविता - डॉ. संपत ठाकुर, प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्र. सं. 1978 (बंबई विश्वविद्यालय द्वारा पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत प्रबंध)
73. हिंदी काव्य में नारी - डॉ. वल्लभदास तिवारी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्र. सं. 2030 वि. संवत
74. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण बेनी माधव, इलाहाबाद, छठा संस्करण 1971
75. हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, चौदहवाँ संस्करण 2019 वि. संवत
76. हिंदी के मध्यकालीन खंडकाव्य - डॉ. सियाराम तिवारी, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली प्र. सं. 1964
77. हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास - डॉ. भागीरथ मिश्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, द्वि. सं. 2015 वि. संवत
78. हिंदी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव - डॉ. सरनामसिंह शर्मा, रामनारायण लाल प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 1952
79. हिंदी काव्यशैलियों का विकास - डॉ. हरदेव बाहरी, भारतीय प्रेस प्रकाशन, इलाहबाद, प्रथम संस्करण

कोश

1. हिंदी साहित्य कोश - सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, प्र. सं. वि. संवत 2020

पत्र - पत्रिकाएँ

1. जनयुग
2. राष्ट्रवाणी (द्वैमासिक) नवंबर/दिसंबर 2005, डॉ. रामकुमार वर्मा विशेषांक
3. साहित्य - अमृत - जून 2007 (मासिक), स्त्री विमर्श : साहित्य और समाज
4. हंस - अप्रेल 1948 / जून 1948 / अक्तूबर 1950
5. वातायन - जनवरी 1967 (प्रभाकर माचवे का लेख - आधुनिकता, समसामायिकता और हिंदी कविता)

* * *

891.432
NAL
T15490